ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आचार्य अपने शिष्य और शिष्याओं को इस प्रकार उपदेश करे कि तू सदा सत्य बोल, धर्माचार कर, प्रमादरहित होके पढ़पढ़ा, पूर्ण ब्रह्मचर्य से समस्त विद्याओं को ग्रहण और आचार्य्य के लिये प्रिय धन देकर विवाह करके सन्तानोत्पत्ति कर, प्रमाद से सत्य को कभी मत छोड़, प्रमाद से धर्म का त्याग मत कर, प्रमाद से आरोग्य और चतुराई को मत छोड़, प्रमाद से पढ़ने और पढ़ाने को कभी मत छोड़। देव विद्वान् और माता पितादि की सेवा में प्रमाद मत कर। जैसे विद्वान् का सत्कार करे उसी प्रकार माता, पिता, आचार्य्य और अतिथि की सेवा सदा किया कर। जो अनिन्दित धर्मयुक्त कर्म हैं उन सत्यभाषणादि को किया कर, उनसे भिन्न मिथ्याभाषणादि कभी मत कर। जो हमारे सुचरित्र अर्थात् धर्मयुक्त कर्म हों उनका ग्रहण कर और जो हमारे पापाचरण उनको कभी मत कर। जो कोई हमारे मध्य में उत्तम विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मण हैं उन्हीं के समीप बैठ और उन्हीं का विश्वास किया कर, श्रद्धा से देना, अश्रद्धा से देना, शोभा से देना, लज्जा से देना, भय से देना और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये। जब कभी तुझ को कर्म वा शील तथा उपासना ज्ञान में किसी प्रकार का संशय उत्पन्न हो, तो जो वे समदर्शी पक्षपातरहित योगी अयोगी आर्द्रचित धर्म की कामना करने वाले धर्मात्मा जन हों जैसे वे धर्ममार्ग में वर्तें वैसे तू भी उसमें वर्त्ता कर। यही आदेश आज्ञा, यही उपदेश, यही वेद उपनिषद् की शिक्षा है। इसी प्रकार वर्त्तना और अपना चाल चलन सुधारना चाहिये।

–सत्यार्थ प्रकाश

''हरिजन''

तुमको बतला कर अधम, नीच ये बने हुए हैं स्वयं हेय;
तुम ज्ञानवान–इन मूर्खों के हित रहे सर्वदा अविज्ञेय!
अब तक भी बची तुम्हारे ही रक्तों में शुचितम आर्य–भक्ति;
तुम कैसे बिछुड़ गये हमसे ओ दलित देश की महाशक्ति!
हे ऋषि, हे योगी; आदिपुरुष! कर रहे तुम्हारी वेद व्यक्ति;
रे कौन तुम्हें कहता अछूत ? तुम तो स्वदेश की महाशक्ति!

–आरसी प्रसाद

विक्रमी नववर्ष 2070 'आर्य वन्दना' के सभी सदस्यों के ऊपर सुख, शांति और समृद्धि की वर्षा करे।

यह अंक आर्य समाज मण्डी के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक डी. ए. वी. हमीरपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६७वां विक्रमी सम्वत् २०७० सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४ मई २०१३

"डी. ए. वी. स्कूल सुन्दरनगर"

मोहित चुग
प्रधानाचार्य

डी. ए. वी. स्कूल सुन्दरनगर की स्थापना जून, १६८६ में हुई थी। यह शिक्षण संस्थान दिन प्रतिदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर है। डी. ए. वी. स्कूल में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ इस तरह से करवाई जाती हैं ताकि वे आधुनिक समय की गतिविधियों के साथ समन्वय कर सकें व समाज में आने वाले परिवर्तनों के साथ तालमेल बना सकें। डी. ए. वी. स्कूल सुन्दरनगर हवन के माध्यम से बच्चों को यह सिखाता है कि जो कुछ भी हम सीखते हैं उसे समाज कल्याण हेतु उपयोग में लाएं। डी. ए. वी. स्कूल, सुन्दरनगर के प्रधानाचार्य श्री मोहित चुग के नेतृत्व में शिक्षा के साथ–साथ अन्य गतिविधियों जैसे एन. सी. सी., इको क्लब और खेल–कूद के माध्यम से बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए अग्रसर है। डी. ए. वी. स्कूल की छात्रा अनुभा गुप्ता ने उत्तर भारत के पंचकुला जोन (सी. बी. एस. ई.) में ६५.६ प्रतिशत अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं अन्य छः विद्यार्थियों ने भी ६० प्रतिशत से ऊपर अंक लेकर विद्यालय, शिक्षक वर्ग तथा अभिभावकों का नाम रोशन किया। इस विद्यालय में लगभग १५०० छात्र–छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा विद्यालय के परिसर में एडुसेट कक्ष, सेमीनार कक्ष और दृश्य–श्रव्य कॉनफ्रेंस हॉल आदि सुविधाएं बच्चों को उपलब्ध करवाई गई हैं ताकि वे वर्तमान के बदलते परिवेश में स्वयं को ढाल सकें और एक जिम्मेदार और सभ्य नागरिक की तरह एक सफल समाज का निर्माण कर सकें।

श्रीमति रानी आर्या जी भारतीय दयानन्द पब्लिक विद्यालय, जोगिन्द्रनगर में मधुर भजन सुनाकर महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज का गुणगान करते हुए।

आर्य वीर दल के प्रान्तीय संयोजक श्री रामफल सिंह आर्य विद्यालय प्रांगण में वेद मन्त्रों से हवन–यज्ञ करवाते हुए।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र0, मो. : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	: रत्न लाल वैद्य, उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184–60332
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज–कण्डाघाट मो. : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी) मो. : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, कनैड, सुन्दर नगर मो. : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: 1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591–05378
	2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161–25501
सह–सम्पादक	: राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	: मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

ऋषिवर देव दयानन्द ने नारी का स्थान पुरुष से उत्तम माना है। नारी राष्ट्र की लक्ष्मी, कुल गौरव और कुल भूषण है। देव दयानन्द ने युवती को शादी के समय दक्षिण की ओर बैठने का विधान संस्कार विधि में किया है। संसार के प्रचीन ऋषि–मुनि, उद्धारक, प्रचारक और समाज सुधारक चाहे वे जगत गुरू शंकराचार्य, गुरू नानक देव, हजरत मुहम्मद साहिब हों सभी ने मां की ही कोख से आकर संसार में अपने सुन्दर विचारों की वर्षा करके मानव मात्र को नई दिशा दिखाकर उनकी बिगड़ती दशा को सँवारा था। वेद, शास्त्रों में नारी को प्रथम देवता मानकर ''मातृ देवो भवः'' की बात कही है अर्थात् हमें माता की सेवा करके उनके शुभाशीर्वाद को प्राप्त करना चाहिये। शास्त्रकारों के अनुसार माता–पिता और आचार्य देवता हैं इन जीवित देवताओं की सेवा में कोई और किसी प्रकार का प्रमाद नहीं करना चाहिये। ''माता कुमाता न भवति'' मां बालक की किलकारियों, मुस्कानों के ऊपर विश्व के सुख को न्योछावर कर देती है। मनुस्मृति में मनु महाराज लिखते हैं 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ स्त्री का मान, सम्मान होता है–उस घर में सुख, शांति और धन–धान्य की वर्षा होती है। वहाँ देवता अर्थात् दिव्य गुण सम्पन्न आत्मायें निवास करती हैं। धर्म धुरंधर ऋषिवर दयानन्द से जब पूछा कि यदि बालक कुल दीपक है तो बालिकायें क्या है ? स्वामी जी ने कहा बेटियाँ तो अपने माता–पिता और सास–ससुर दोनों घरों को जोड़ने बाली हैं। वे तो गृह–लक्ष्मी और गृह शोभा है। उनके पढ़ने और विदुषी बनने से बालक –बालिकाओं के संस्कार बनते हैं। तभी 'माता' निर्माता भवति कहा है। माता अपनी संतानों को संस्कारित करके उन्हें चरित्रवान आदर्शवादी, ज्ञानी और परोपकारी बनाएं ताकि वे समाज निर्माण में भरपूर सहयोग देती रहें। कवि ने माता को सम्बोधित करते हुये कहा–

जननी जने तो भक्तजने या दाता या शूर।
या तो जननी बांझ रहे, काहे गंबाये नूर।

ऋषिवर देव दयानंद ने बलिकाओं की शिक्षा पर जोर देते हुये इस बात को स्वीकारा है कि केवल पढ़ी–लिखी मातायें ही सन्तानों को संस्कारित कर सकती है। अनपढ़ और अधपढ़ महिलायें तो सन्तानों को बुझे हुये दीपक की तरह हैं जो सन्तानों पर संस्कारों की वर्षा भला कैसे कर पायेगी ? स्वयं बुझा हुआ दीपक दूसरे दीपक को कैसे प्रकाशित करेगा ? केवल और केवल पढ़ी लिखी मातायें ही बच्चों को चरित्रवान, सुखयुक्त और पाखण्ड मुक्त बनाने की शक्ति और साहस रखती हैं। आज पांच–पांच वर्ष की बालिकाओं के साथ बलात्कार का नंगा ताण्डव नृत्य हो रहा है जिसे सुनकर शर्म भी शर्मशार हुये बिना नहीं रह सकती। आज युग पुरूष, युग प्रणेता, मर्यादा पुरूषोतम श्री राम को घटिया पति कहने वाले उच्चतम न्यायालय के उच्चतम विचार रखने वाले मान्य रामजेठमलानी से बड़ी विनम्रता से जानना चाहूँगा कि कानून में सख्ती आने के उपरान्त भी समाज में अधर्म, पाप और अन्याय का ताण्डव नृत्य क्यों हो रहा है ? प्रशासन, नेता, विचारक और समाज सुधारक द्रोणाचार्य, कुल गुरू कृपाचार्य और भीष्म पितामह बनकर इन प्यारी –प्यारी, नन्हीं–नन्हीं बालिकाओं से दुराचार और यौनाचार रोक पाने में क्यों मौन बने हैं ? अत्याचारों से जूझने के लिये उनके बाजू क्यों नहीं फड़फडाते ? डाक्टरों ने यौन पीड़ित बालिका के पेट से आप्रेशन द्वारा दो मोमबत्तियों और एक शीशी निकाली। अब बालिका वैंटिलेटर पर पड़ी जीवन और मृत्यु से जूझती हुई परलोक सिधार गई। यह है उस देश की संतानों का हाल जिस देश के सम्बन्ध में कविवर मैथिली शरण गुप्त जी लिखते हैः–

हाँ वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
भगवान की भवभूतियों का पहले यह प्रथम भण्डार है
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।

उस देश की आज की स्थिति ऐसी बनी है किं ज्यों–ज्यों सरकार द्वारा कानूनों को मज़बूत बनाने की दुहाई दी जाती है–यौनाचार, पापाचार और विभिन्न प्रकार से महिलाओं पर किये जा रहे अत्याचार थमने का नाम नहीं लेते गुप्त जी तो लिखते हैं :–

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इसके निवासी आर्य हैं
विद्या, कला, कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं
पर संतान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़ें
पर चिन्ह उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

आज विश्व के देशों से भारत में आने वाले पर्यटकों को चेतावनी देते हुये वहाँ के राष्ट्राध्यक्षों को भारत में यात्रा करने हेतु अत्यन्त सावधानी बर्तने की चेतावनी दी जाती है। आज देश के हर बड़े शहर में बेटियों और महिलाओं से बलात्कार की घटनाओं के शर्मनाक और दर्दनाक समाचार देखने, सुनने और पढ़ने को मिल रहे हैं। आज विश्व की अध्यात्मिक पिपाशा

शान्त करने वाला देश संसार का सबसे निकृष्ठतम देशों की पंक्ति में आ खड़ा हुआ है। जिस देश की सन्तानों का चरित्र बिगड़ गया हो उनसे उल्टे-उल्टे कार्य ही होंगे। इस दिशा में इस देश की दशा सुधारने में दिशा परिवर्तन की अत्यावश्यकता है। क्रूरतम दण्ड देने का प्रावधान करके भी लोगों की मानसिकता में कोई और किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं आता दीख पड़ता है। लोगों के जीवन से नैतिक और चारित्रिक गुणवता का अन्त हो गया है।

हमारे राजनेताओं, समाज सुधारकों का जीवन पथ प्रदर्शन करने वाला होना चाहिये। उत्तर प्रदेश के एक मन्त्री ने अपने भाषण में कहा कि हमारी सड़कें हेमामालिनी और पूजा भट्ट के गालों की तरह चिकनी -चिकनी बनी हैं। यह कैसा फूहड़ भाषण है ? कालान्तर में मन्त्री महोदय को मुख्यमन्त्री अखिलेश यादव के मांगने पर अपने पद से इस्तीफा देने के लिये वाध्य होना पड़ा। स्वयं पूजा भट्ट के पिता श्री महेश भट्ट जी ने कहा है कि मेरी बेटी पूजा भट्ट बहुत ही सुन्दर है। यदि वह मेरी बेटी ना होती तो मैं उससे शादी कर लेता। महेश भट्ट एक ख्याति प्राप्त सिनेमा डायरेक्टर होने पर इस प्रकार की ओछी बातें करें तो बेचारा मन्त्री भी यदि पूजा भट्ट और हेमामालिनी के चिकने-चिकने गालों से सड़कों की उपमा करे तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं।

१५ अप्रैल को गांधी नगर से लापता गुड़िया के साथ मनोज और प्रदीप नामक युवकों ने अपहरण कर बलात्कार किया मनोज इससे पूर्व अपनी पत्नी और साली के साथ बलात्कार कर चुका है। प्रदीप पर भी इसी प्रकार का आरोप है। पुलिस द्वारा रिपोर्ट लिखने पर आना-कानी करने और लड़की के पिता को दो हज़ार रुपये रिश्वत देकर अपना मुख बंद रखने की पेशकश से पुलिस का काला चेहरा एक बार फिर उजागर हो गया है। ऐसे पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ कठोर दण्ड का प्रावधान होना चाहिये। ऐसे कुकृत्य अपना घिनौना सिर फिर से ऊपर न उठाये इसके लिये समाज के हर व्यक्ति को जागरुक रहना होगा और मानवता पर लगे इस कलंक को सदा व सर्वदा के लिये सर्वनाश करना होगा। गुप्त जी के इन वाक्यों की ओर ध्यान देना होगा।

हम क्या थे, क्या हैं और क्या होंगे अभी
आओ मिल बैठकर विचारें यह समस्याऐं सभी।

—कृष्ण चन्द आर्य

सभा बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की साधारण बैठक ०५ मई, २०१३ को प्रातः ११.०० बजे आर्य समाज मण्डी के सभा-भवन में होनी निश्चित हुई है सभी सदस्यों से निवेदन है कि उक्त स्थान व समय पर पधार कर बैठक को सफल बनायें।

—सत्यपाल भटनागर
प्रदेश महामन्त्री

!!ओ३म्!!

आर्य समाज कण्डाघाट का वार्षिक उत्सव

११ से १४ मई, २०१३ शनिवार से मंगलवार तक

आप सभी को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज कण्डाघाट का वार्षिक उत्सव ११ मई से १४ मई तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है।

उत्सव में स्वामी विदेह योगी (कुरूक्षेत्र), डॉ. सुरेन्द्र कुमार (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक), श्री कल्याण सिंह वेदी भजनोपदेशक रुढ़की (उत्तराखण्ड) तथा श्री कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर) पधार कर अपने मुखारविन्द से वेदामृत वर्षा करेंगे। अतः आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि सपरिवार एवं ईष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाये तथा अपने जीवन को सफल बनाऐं।

—पी. सी. सूद
प्रधान, आर्य समाज कण्डाघाट

!!ओ३म्!!

आर्य समाज चोलथरा का वार्षिक उत्सव

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज चोलथरा का वार्षिक उत्सव दिनांक २७ अप्रैल से २६ अप्रैल, २०१३ तक बड़े हर्षोउल्लास तथा उत्साह के साथ मनाया गया। उत्सव में आचार्य विरेन्द्र शास्त्री (सहारनपुर), श्री संदीप वैदिक (मुजफरनगर) तथा श्री वीरी सिंह आर्य ने पधार कर अपने मुखारविन्द से वेदामृत वर्षा की। सभी आर्यजनों ने सपरिवार एवं ईस्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाई तथा अपने जीवन को सफल बनाया।

—प्रधान
आर्य समाज, चोलथरा

"भक्त और भगवान"

♦स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी

विचित्र प्रकार की रुकावट है यह चिन्ता, इससे बनता कुछ भी नहीं, बिगड़ता सब–कुछ है। परन्तु बने या न बने, चिन्ता करने वाला समझते तो नहीं। कभी एक बात की चिन्ता, कभी दूसरी बात की। यह संसार है, इसमें सुख भी है, दुःख भी है। कर्म के फल भोगे बिना यहाँ से छुटकारा नहीं होता–

देह धरे का दण्ड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी भुगते हंसि–हंसि, मूर्ख भुगते रोय।।

जब भुगतना ही है तो फिर रोना किसलिए ? हँसकर भुगत लो। और फिर चिन्ता की बात इस संसार में है क्या ? सबसे बड़ी बात तो मृत्यु है न ? वह है निश्चित। रोते रहिये तो भी–

रोवनहारे भी मरे, मरे जलावनहार।
हा–हा करते वे मरे, काहे करूँ पुकार।।

रोनेवाले भी बचे नहीं, हाहाकार करनेवाले भी बचे नहीं, फिर यह हाय–तौबा किसलिए ?

यह तो चला–चली का मेला है भाई, यहाँ चिन्ता करके मिलेगा क्या ?

जो ऊगा वह काटिये, फूला सो कुम्हलाय।
जो बना वो गिर पड़े, जो आया सो जाय।।

जाना तो है ही, चिन्ता करके जाना या बिना चिन्ता के जाना, जाये बिना निर्वाह नहीं–

पानी का ज्यूँ बुलबुला, यूँ मानुष की जात।
एक दिना छिप जायेंगे, तारे ज्यूँ प्रभात।।

नहीं, मृत्यु से भी डरा नहीं। इसकी चिन्ता भी मत करो। चिन्ता से कभी कुछ होता नहीं। भगवान् तो आनन्दरूप है। आनन्द की ज्योति फैल रही है वहाँ। उन्हें मिलना है तो शोक और चिन्ता के इस अंधेरे को दूर करके मिलना होगा। चिन्ता को त्याग देना स्वयं एक योग है–

सर्वचिन्तापरित्यागो निश्चिन्तो योग उच्यते।

सब चिन्ताओं को त्याग देने से रुकावटें–वासना, क्रोध, लोभ, मोह, भय, चिन्ता और शोक–दूर कर दीजिये तो प्रभु का दर्शन होता है अवश्य। परन्तु यह सारा झगड़ा जहाँ से आरम्भ होता है, वह है वासना। सब दुःखों की जड़ वह है, सब रुकावटों की माँ। इससे बचने का एक ही उपाय है कि नर बनो, नारी बनो। नर और नारी का अर्थ क्या है, यह मैंने पहले बताया। आत्म–ज्ञान जिसका सारथी है और जिसने मन की लगाम अपने वश में कर लिया है वह नर है, वह नारी है। उसे नारायण का दर्शन होता है। ये नर और नारायण आपस में मिलते हैं अवश्य।

इस सम्बन्ध में एक बात और कहना चाहता हूँ, यह मेरे अनुभव की बात है कि किसी भी कार्य में अति न करो भगवान् के भजन में भी अति करना कभी–कभी रुकावट का कारण बन जाता है। एक व्यक्ति है, विवाह कर लिया उसने। कुछ बच्चे हो गये। तभी प्रभु–भजन का शौक जाग उठा। अच्छी बात है। इस शौक का जागना सौभाग्य है। परन्तु यदि अपने बीवी–बच्चों को भूलकर, अपने कर्त्तव्य को छोड़कर वह व्यक्ति हर समय प्रभु–भजन में लगा रहे तो बहुत देर यह बात चलेगी नहीं। एक दिन ऐसी अशान्ति उसके हृदय में उत्पन्न होगी कि सब किया–कराया चौपट हो जाएगा। यह अति जिस प्रकार बुरी है, उसी प्रकार यह अति भी बुरी है कि प्रभु को ही भूल जाये; हर समय नॉविल, सिनेमा, सर्कस, नाच–रंग और तमाशे ही देखता रहे। इस अति से भी विनाश होता है।

भगवान् बुद्ध से पूर्व यज्ञ की प्रथा बहुत ज़ोरों पर थी। उसका रूप बिगड़ गया था। इस बिगड़े रूप की अति हो रही थी। पशुओं को इनमें काटा जाता था। कभी–कभी नर–बलि भी दी जाती थी। बुद्ध ने इस बात को देखा। यज्ञ के विरुद्ध ही प्रचार कर दिया। एक अति पहले हो रही थी, दूसरी अति बुद्ध ने कर दी। लोगों ने पूछा, "तुम यज्ञ को मानते हो ?" बुद्ध बोले, "नहीं।" उन्होंने पूछा, "वेद को मानते हो ?" बुद्ध बोले, "नहीं।" प्रश्न हुआ, "ईश्वर को मानते हो ?" बुद्ध ने उत्तर दिया, "नहीं।" संसार पहले ही एक अन्धकार में था, तब दूसरे अन्धकार में जा गिरा। बुद्ध के पश्चात् जगद्‌गुरु शंकराचार्य आये। उन्होंने एक और अति की। बुद्ध ने कहा था, "ईश्वर नहीं है।" शंकर ने कहा, "सब–कुछ ईश्वर ही ईश्वर है, उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।" शताब्दियों के पश्चात् महर्षि दयानन्द आये। उन्होंने वास्तविकता को संसार के समक्ष रक्खा। अति का मार्ग छोड़कर सत्य मार्ग अपनाते हुए कहा–ईश्वर भी है, आत्मा भी है, प्रकृति भी है। प्रकृति सत् है, आत्मा सत्–चित् है, ईश्वर सत्–चित् और आनन्द है। यह अति सदा कार्य को बिगाड़ती है–

अति रूपेण वै सीता अति गर्वेण रावणः।
अति दानात् बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्।।

बहुत रूपवती होने से सीता संकट में फंसी। बहुत अभिमानी होने से रावण मारा गया। बहुत दान करने से राजा बलि बांधे गये। यह अति अच्छी नहीं।

अंग्रेजी भाषा में भी कहा है–

Too much of every thing is bad

अति हर बात में बुरी है–

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।।

इस सब–की–सब रुकावटों को दूर करके भक्त प्रार्थना करता है–

अरं दासो मोलहुषे कराण्यहं देवाय भूणयेअनागाः।
अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति।।
(ऋ० ७। ८६। ७)

इस मन्त्र का अर्थ है–

"ओ मेरे प्रभु! आनन्द को देनेवाले मेरे देवता! मैं पापों को छोड़कर तेरा दास बनकर तेरे पास आया हूँ। मेरे चमकते हुए परमेश्वर, कृपा कर! तू दानियों का दानी महादानी है, सबका पालन करनेवाला है, सबका स्वामी है। जो अंधेरे में भटकते हैं उन्हें तू प्रकाश देता है, उनके अज्ञान को ज्ञान में बदलकर उन्हें अविद्वान् से विद्वान् बनाकर उनके भक्तिभरे गीत सुनता हुआ तू उन्हें उस मार्ग पर ले जाता है जिसका लक्ष्य आनन्द है, परम आनन्द है।"

और सुनो! यह अज्ञान को ज्ञान में बदलने की बात, अंधेरे में भटकते हुए को प्रकाश दिखाने की बात, केवल कविता नहीं, यह सत्यता है। ईश्वर बोलता है, आवाज़ देता है, स्पष्ट रूप से कहता है, "ऐसा न कर।" महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' में स्पष्ट लिखा है–

जब आत्मा मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उसी समय जीव की इच्छा–ज्ञान आदि उसी इच्छित विषय पर झुक जाते हैं, उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कर्मों के करने में अभय, निरशंकता और आनन्द–उत्साह उठता है जो जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।"
(सातवाँ समुल्लास)

ईश्वर प्रतिक्षण प्रेरणा देता रहता है। हर समय सावधान करता है। हर समय उसकी आवाज़ आती है, "रुक जाओ! आगे न बढ़ो, खतरा है!"

कई भाई कहते हैं कि हमको तो ऐसी आवाज़ सुनाई नहीं देती। वस्तुतः उन्हें सुनाई नहीं देती। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनके भीतर यह ध्वनि उत्पन्न नहीं होती। आप एक कमरे में बैठे है, बिल्कुल एकान्त है, बिल्कुल नीरवता, शांति। दीवार पर लगी घड़ी की आवाज़ के अतिरिक्त कोई आवाज़ नहीं। टिक, टिक, टिक, लगातार वह चल रही है। तभी नीचे बाज़ार से एक जुलूस निकलने लगता है। उसके बाजों की आवाज़ कान फाड़े डालती है। नारे लगानेवालों ने आसमान सिर पर उठा रक्खा है। आपको घड़ी की आवाज़ आनी बन्द हो जाती है। आप आश्चर्य से दीवार की ओर देखते हैं–"क्या घड़ी बन्द हो गई ?" नहीं, बन्द हुई तो प्रतीत नहीं होती। उसका पैण्डुलम हिल रहा है, फिर आवाज़ क्यों नहीं आती ? तभी आपको ध्यान आता है और उस खिड़की को बन्द कर लेते हैं जो बाज़ार की ओर खुलती है। उसके बन्द होते ही नीचे से आनेवाला कोलाहल बन्द हो जाता है। घड़ी की आवाज़ फिर सुनाई देने लगती है।

सुनो मेरी माताओ ! सुनो मेरे बच्चो ! जब तक बाहर होने वाले इस कोलाहल की आवाज़ को, क्रोध की आवाज़ को, वासना की आवाज़ को, लोभ, मोह, भय आदि की आवाज़ को रोकोगे नहीं तब तक अन्दर बैठे हुए प्रभु की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। यह आवाज़ सुननी है तो उस खिड़की को बन्द कर दो जो संसार के बाजार की ओर खुलती है–

सुमरन सुरत लगाइके, मुख ते कुछ नहिं बोल।
बाहर के पट बन्द कर, अन्दर के पट खोल।।

तब आयेगी आवाज़। प्रभु तो यहाँ बैठे हैं, बाहर जाने की आवश्यकता नहीं, ढूँढने की आवश्यकता नहीं–

दादू जिन कंकर पत्थर सेविआ, सो अपना मूल गँवाये।
अलख देव अन्दर बसे, बाहर काहे जाये।।
कई तो दौड़े द्वारिका, कोई काशी जाये।
कोई मथुरा को चले, साहब घट के माहिं।।

वह तो अन्दर बैठा है। जागो! उसकी आवाज़ सुनो–

ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रभु तुझमें बसे, जाग सके तो जाग।।

जागकर सुनो, उसकी आवाज सुनाई देगी। उसका दर्शन भी होगा। तब मांग लेना जा मांगना है–सब कुछ मिलेगा उस दरवार से ओ३म नाम का धन मिलेगा तब, ऐसा धन जो इस संसार में भी काम आता है, परलोक में भी; जिसके बाद कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं रहती।

वरिष्ठ भजनोंपदेशक पं. ओम्प्रकाश वर्मा के रोचक व प्रेरक संस्मरण

वैदिक धर्म की जय

♦इन्द्रजित्‌देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

यह घटना सन् १९८१ अथवा १९८२ की है। तब मुझे आर्य समाज, जेलमार्ग (महर्षि दयानन्द मार्ग) बीकानेर के वार्षिकोत्सव पर आमन्त्रित किया गया था। उस उत्सव में शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित शान्ति प्रकाश जी, राजस्थान के भजनोंपदेशक श्री पं. अभय जी व श्री आनन्द सुमन भी पधारे हुए थे। उत्सव में सभी विद्वानों के उपदेश व भजन नित्य होते थे।

अन्तिम दिन रात्रिकाल में शुरू में मेरे गीतों व भजनों का कार्यक्रम रखा गया था। मेरे पश्चात् आनन्द सुमन का भाषण निश्चित था व तदनुसार उन्होंने अपना भाषण दिया। सब आर्यों को ज्ञात होगा कि वे पहले मुसलमान थे तथा स्वयं की छत्तारी के नवाब का पोता बताते थे। सन् १९८१ या १९८२ ई. में शुरू होकर आर्य समाज में उन्होंने प्रवेश पाया था वे इस्लाम का सैद्धान्तिक खंडन यत्र–तत्र करते थे व इस विषय में एक पुस्तक भी लिखी थी। बीकानेर के उपरोक्त उत्सव में भी अपने भाषण में उन्होंने वहाँ यही किया। जब वहाँ उन्होंने कुरान की हदीसों का खण्डन तथा मुहम्मद साहिब के चारित्रिक दोष गिनाने आरंभ किए तो कुछ इस्लामी लोगों ने पण्डाल में प्रवेश करके मंचस्थ विद्वानों व अधिकारियों पर आक्रमण कर दिया।

श्रोताओं में से कुछ लोग तो पण्डाल से बाहर निकल गए परन्तु कुछ आर्यजन वहीं डटे रहे। मैं तब युवा ही था व वेदी पर ही बैठा दृश्य देख रहा था। मुझे जोश आ गया तथा मैंने एक–दो आक्रमणकारियों को पीट दिया। बाद में माईक मैंने सम्भाला व बोला–"दंगा करने के बजाए हमारी बात पहले सुनो तथा तत्पश्चात् बताओ कि इसमें क्या गलत है व क्या ठीक है।"

मैंने पूछा–"तुम लोग ऐसा कहते हो कि कुरान खुदा का बनाया हुआ है परन्तु इसका आरंभ ही तुम्हारी बात का खण्डन करता है क्योंकि वहाँ लिखा है–"आरंभ साथ नाम अल्लाह के क्षमा करने वाला दयालु।"
कुर्रान, मंजिल २, सिपारा २, सूरत २ हिन्दी अनुवाद

"हाँ, ऐसा ही है।"

"तो फिर क्यों कहते हो कि यह ग्रन्थ खुदा का बनाया है ? इस वचन से सिद्ध होता है कि इसको बनाने वाला कोई दूसरा है क्योंकि यदि यह परमेश्वर का बनाया होता तो 'आरम्भ साथ नाम अल्लाह के' ऐसा न कहता परन्तु 'आरम्भ वास्ते उपदेश मनुष्यों के, ऐसा लिखता। इसके अतिरिक्त यदि वह क्षमा व दया करने हारा है तो उसने अपनी सृष्टि में मनुष्यों के सुखार्य अन्य प्राणियों को मार दारुण पीड़ा दिलाकर, मरवाके माँस खाने की आज्ञा क्यों दी ? क्या वे प्राणी अनपराधी तथा परमेश्वर के बनाए हुए नहीं है ? मारने की आज्ञा देने वाला दयालु नहीं हो सकता। कुर्रान में यह भी लिखा है कि जो आसमान और भूमि का उत्पन्न करने वाला है, जब वह कुछ करना चाहता है तो उसे कुछ करना नहीं पड़ता किन्तु उसे कहता है कि हो जा, बस हो जाता है। कुर्रान, मंजिल २, सिपारा २, सूरत २, आयत ११७

मेरा पूछना है कि यदि खुदा ने आदेश दिया कि हो जा, तो आदेश किसने सुना और किस को सुनाया ? कौन बन गया तथा किस से बना ? यह संसार कहाँ से आया ? बिना कारण कोई भी कार्य नहीं होता तो यह अति विशाल जगत् कारण के बिना कहाँ से आया ?"

मैं ने यह भी कहा कि कुर्रान में लिखा है कुर्रान, मंजिल २, सिपारा ८, सूरत ७, आयत ५४–५५ कि तुम्हारा मालिक अल्लाह है, जिसने मुसलमानों व पृथ्वी को छः दिन में उत्पन्न किया तथा बाद में तकरार पकड़ा (= विश्राम किया) फिर यह बात भी लिखी है कि खुदा ने कहा–हो जा, तो जगत उत्पन्न हो जाता है। इन परस्पर विरोधी बातों के किसे सत्य माना जाना चाहिए ?"

मैंने आगे यह पूछा–कुर्रान में तो यह भी लिखा है कि यह पृथ्वी चपटी है परन्तु वेद में यह लिखा है कि पृथ्वी गोल है। 'भूगोल' शब्द में ही भूमि को गोल स्वीकार किया गया है। अब तो विज्ञान ने वेद का ही समर्थन कर दिया है। बोलो! तुम्हें कोई शंका है ? यदि हमारी कोई बात तुम्हें स्वीकार न हो तो अपने किसी मौलवी को शास्त्रार्थ हेतु बुला लाओ।"

मेरे पीछे विराजमान हो रहे श्रद्धेय शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. शान्ति प्रकाश जी ने मेरी पीठ थपथपाई तथा श्रोताओं में से एक व्यक्ति झटपट मंच पर चढ़ आया और मुझे गले लगकर नारे लगाने लग पड़ा–"वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय, 'सत्यार्थ प्रकाश' अमर रहे।"

मेरे बाद श्री पं. शान्ति प्रकाश जी का प्रवचन हुआ तथा पं. जी ने भरपूर तर्कों, युक्तियों व प्रमाणों की झड़ी लगाकर कुर्रान का खण्डन किया तो एक भी मुसलमान श्रोता नहीं बोला। अपना अद्भुत प्रभाव छोड़कर वह उत्सव सम्पन्न हो गया।

"संघर्ष"

♦कृष्ण चन्द आर्य

सुन्दर नगर की झील में अनेकों युवक–युवतियाँ, बालक, वृद्ध छलांग लगा कर अपनी जीवन लीला को देखते ही देखते समाप्त कर बैठते हैं। सड़क के ऊपर चल रहे व्यक्तियों में कुछ बहादुर युवकों ने नहर में स्वयं कूदकर अनेकों व्यक्तियों को डूबने से बचाया लेकिन फिर भी कई लोग झील में ही जल समाधि ले लेते हैं। जीवन के संघर्षों से घबराकर जीवन लीला समाप्त करना महान् कायरता और नपुंसकता का परिचयक है। जीवन में संघर्ष धूप और छाया की तरह आने जाने वाले हैं। इनको हंसते–हंसते मुकाबला करके इनसे दो–दो हाथ करने चाहिये। संघर्ष का मुकाबला करना श्रेयस्कर है ना कि उनसे डरकर ज़हर निगलना अथवा कूद कर छलांग लगाना। किसी ने ठीक ही कहा, "इस जिन्दगी में सुख न पाया मरना चाहोगे, मरकर भी सुख न पाया तो किधर जाओगे।" हम राम, कृष्ण, ऋषि–मुनियों की सन्तानें हैं। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर संघर्षों का मुकाबला करना सीखना चाहिये। हमें हमारे धार्मिक महापुरूष यही शिक्षा देते रहे कि चाहे जीवन में सुख आये अथवा दुःख, बसन्त आये अथवा पतझड़ मनुष्य को शान्त भाव से, सुखी मन से संघर्ष का मुकाबला करना सीखना चाहिये। तभी हम ओ३म् प्रभु का सहारा लेकर जीवन के महासागर से पार उतर पायेंगे। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण अथवा धर्म धुरन्धर देव दयानन्द आदि विभूतियों के जीवन से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये। उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी। खेल–खेल में संसार में महान् कार्य कर गये श्री राम, योगेश्वर कृष्ण, भीष्म पितामह आदि के जीवन में बड़े से बड़े भूचाल आये लेकिन उन्होंने विकट और विपरीत परिस्थितियों का बहादुरी से मुकाबला किया और संसार को अपने पद्चिन्हों पर चलने के लिये प्रेरित किया। हम उन विभूतियों की संतानें कहलाने का गौरव तो मानती हैं लेकिन उनके पद्चिन्हों पर चलने पर छोटी सी आपत्ति आने पर हम व्याकुल हो उठते हैं। जीवन से लाचार होकर जीवन लीला को ही समाप्त करने हेतु संकल्प ले बैठते हैं। क्या यह उन महापुरूषों का मजाक नहीं है जिन्होंने विकट और विषम परिस्थितियों में सत्य, अहिंसा, न्याय का साथ नहीं छोड़ा चट्टान की भान्ति खड़े होकर हर अन्याय और अत्याचार का डट कर मुकाबला किया। गुरू गोबिन्द सिंह जी की पत्नी ने जब उनसे पूछा कि मेरे चारों पुत्र कहाँ है ? तो गुरू देव ने हुंकार भरते हुये खालसा पन्थ की ओर इशारा करते हुये कहा "इस पूतन के शीश पर वार किया सुत चार, चार मुये तो क्या हुआ जीवित कई हज़ार।"विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला करते हुये जो व्यक्ति अपने जीवन पथ को कष्ट मुक्त और सुखमय बनाने का साहस और संयम रखते हैं, उनका जीवन धन्य स्तुत्य और अनुकरणीय है। कवि ने ठीक ही कहा है–

'जीवन अपूर्ण लिये हुये पाता कभी खोता कभी,
आशा–निराशा में घिरा, हंसता कभी रोता कभी।
गति मति न हो अवरूद्ध इसका ध्यान आठों याम है।
चलना हमारा काम है।'

हमें अपने पूर्वजों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये जिन्होंने जीवन की अन्तिम सांस तक हंसते और मुस्कराते हुये संघर्षों का समाधान किया। इस सम्बंध में श्री राम, योगिराज कृष्ण और भीष्म पितामह आदि अनेक व्यक्तियों का जीवन हमारे लिये शिक्षा और प्रेरणा देता है।

अपने जीवन को प्रतिकूल परिस्थितियों में समस्याओं का सामना करती हुई महिलाओं का उदाहरण हमारे समक्ष श्री विजय जी सम्पादक 'पंजाब केसरी' ने अपने १७ अप्रैल २०१३ के सम्पादकीय में व्यक्त किया है। इसे यथावत जानकारी हेतु यहां उधृत किया जा रहा है ताकि समाज की इन कमज़ोर वर्ग की महिलाओं से हम प्रेरणा ले सकें जिन्होंने विकट और विषम परिस्थितियों में हिमालय पर्वत जैसे संकट का मुकाबला करके अपनी सन्तानों के अध्ययन के द्वार खोल दिये।

"नारी जाति को देवी समान दर्जा देने वाले हमारे देश की महिलाओं ने अपने प्रयासों, कार्यों और संकल्पों के दम पर ही विश्व भर में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। राजनीति, उद्योग, समाजसेवा, खेल या फिर फिल्मों की ही बात क्यों न हो, भारतीय महिलाओं ने हर जगह अपनी सशक्त दावेदारी प्रस्तुत की है और महिलाएं राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री व राज्यपाल जैसे ऊंचे पदों पर पहुंच रही हैं।

परन्तु समाज में महिलाओं का ऐसा वर्ग भी

मौजूद है जिन्हें कोई सुविधा प्राप्त नहीं और वे तमाम संकटों में से गुजरते हुए हर मुसीबत का साहसपूर्वक सामना करके बुलंद आवाज में यह संदेश दे रही हैं कि ''हिम्मत करे इंसान तो क्या हो नहीं सकता''।

इसी संदर्भ में आज हम समाज के तथाकथित सर्वहारा वर्ग से सबंधित दो साहसिक महिलाओं का उल्लेख कर रहे हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों का पूरी शक्ति से सामना करके सिद्ध कर रही हैं कि वे अपनी संतान के लिए कुछ भी कर सकती है :

लुधियाना के जगराओं पुल के निकट एक छोटे से मकान में रहने वाली ४० वर्षीय श्रीमती मायादेवी की शादी हरियाणा के रेडू गांव के राम कुमार से १२ वर्ष पूर्व हुई थी और उनका एक ८ वर्ष का बेटा भी है। गत वर्ष अप्रैल में राम कुमार की मृत्यु के बाद उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा और उन्हें अपने बेटे को पढ़ाने के वे सपने चूर-चूर होते नजर आने लगे जो उन दोनों ने मिल कर देखे थे।

जीवन के बिखरे हुए सिरे जोड़ने की कोशिश में कई महीने गुजार देने के बाद अंततः माया देवी ने भी अपने दिवंगत पति वाला रेलवे स्टेशन पर सामान ढोने का काम करने का फैसला कर लिया। उन्होंने पोर्टर के लिए वांछित टैस्ट देकर बाकायदा लाइसैंस प्राप्त किया क्योंकि रेलवे में इस काम के लिए दया के आधार पर नौकरी देने का कोई प्रावधान नहीं है। अब वह अपने बच्चे को ऊँची शिक्षा दिलाने का अपने पति का सपना पूरा करने के लिए 'कुली' का काम कर रही हैं।

जयपुर की ३३ वर्षीय श्रीमती मंजू देवी की कहानी भी इससे मिलती-जुलती है। एक वर्ष पहले उनकी जिंदगी में कोई दुख नहीं था। उनका अपना एक छोटा-सा घर था जिसमें वह अपने पति और बच्चों के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहती थीं।

लेकिन माया देवी की भांति ही एक वर्ष पूर्व रेलवे स्टेशन पर पोर्टर उनके पति महादेव यादव की असामयिक मृत्यु से उनकी भी दुनिया उजड़ गई तथा श्रीमती मंजू देवी पर अपनी २ बेटियों और एक बेटे के पालन-पोषण की जिम्मेदारी आ पड़ी जो सभी एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ते हैं।

अतः मंजू देवी ने भी अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा दिलाने का अपना सपना पूरा करने के लिए नए सिरे से जिंदगी की शुरूआत करते हुए जयपुर रेलवे स्टेशन पर कुली का ही काम करने हेतु लाइसैंस के लिए आवेदन दिया। लाइसैंस मिलना आसान नहीं था और इसके लिए उन्हें भारी मशक्कत करनी पड़ी जिसमें उनके पति के मित्रों व रिश्तेदारों ने भी उनकी सहायता की।

रोज १० घंटे काम करने वाली मंजू देवी का कहना है, ''मैं अपने बच्चों को भूखा मरने के लिए कैसे छोड़ सकती थी। मुझे लाइसैंस हासिल करना ही था।'' उन्हें रेलवे स्टेशन पर बोझा ढोता देख कर लोग हैरान होते हैं।

शुरू-शुरू में उन्हें भी यह काम करना काफी विचित्र लगता था लेकिन अब वह भी इसकी अभ्यस्त हो गई हैं, पुरुष पोर्टरों की भांति ही अपना काम सहजतापूर्वक करती हैं और अब उन पर लोगों की घूरती और हैरान नजरों का भी असर नहीं होता।

माया देवी और मंजू देवी समाज के सर्वहारा वर्ग से संबंधित महिलाएं हैं लेकिन वे दूसरी महिलाओं से इस कारण भिन्न हैं क्योंकि उन्होंने हालात के आगे हथियार नहीं डाले और पूरी ताकत से प्रतिकूल हालात का मुकाबला करके दूसरी मजबूर बहनों को किसी भी तरह के संकट के विरुद्ध उठ खड़ी होने का संदेश दे रही हैं।

ये वे महिलाएं हैं जिन्होंने अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए उस काम को करने में संकोच नहीं किया जिसके लिए वे शारीरिक रूप से कतई सक्षम नहीं थी परन्तु वे इस आशा में तमाम दुःख सह रही हैं कि बड़े होकर उनके बच्चे उनका सहारा बनेंगे।

यह सबक है उन संतानों के लिए जो अपने मां-बाप का प्यार भुला कर उनके खून के प्यासे हो रहे हैं, जैसे कि २७ मार्च को फगवाड़ा के भुल्लाराई में एक युवक ने जरा सी बात पर विवाद होने पर अपनी मां की हत्या कर दी। संतानों द्वारा भूमि पर कब्जा व अन्य घरेलू विवादों के चलते अपनी माताओं व पिताओं से मारपीट व इस तरह के हमलों, अत्याचारों, घर से निकालने आदि के समाचार अक्सर आते रहते हैं।

जहां संतानों का इस तरह का व्यवहार यह दर्शा रहा है कि संतानें अपने रास्ते से भटक कर आवेश में अपने माता-पिता की जान की प्यासी हो रही हैं, वहीं इसके विपरीत माताएं और पिता अपनी संतानों को पालने के लिए हर मुसीबत सहने को तैयार रहते हैं जिसके लिए उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।''

''कर्मफल सिद्धांत एक अलग दृष्टिकोण''

परोपकारी अंक २३ दिसम्बर (प्रथम) २०१२ में प्रकाशित जिज्ञासा समाधान ३८ पर लेखक का अभिमत

♦अभिमन्यु कुमार खुल्लर, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

'कर्मफल सिद्धांत–एक अलग दृष्किोण लेख पाप–पुण्य की मान्य, स्वीकृत विचारधारा के विपरीत है और इस पर प्रतिक्रिया, आलोचना होगी। परिणाम यह होगा कि मुझे उन ग्रन्थों का पता चलेगा जिनका मैनें अध्ययन नहीं किया है और वे तथ्य भी मुझे पता चलेंगे जो विद्वानों, संन्यासियों के प्रवचनों से मुझे कर्णगोचर नहीं हुए। इस प्रक्रिया के लिये मैं तैयार था।

यह लेख साप्ताहिक आर्यजगत्, नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि, रोहतक, नूतन निष्काम पत्रिका, मुम्बई में प्रकाशित होने की सूचना के साथ श्री टीकाराम आर्य के समाधान का संदर्भ देते हुए जिज्ञासा समाधान ३८, दिसम्बर (प्रथम) २०१२ में संपूर्ण लेख प्रकाशित कर समाधान प्रस्तुत किया है। अब यह लेख साप्ताहिक आर्य मर्यादा, जालंधर, मासिक आर्यवन्दना, सुन्दरनगर (हिमाचल), साप्ताहिक अयोध्या संवाद, जानकीपुरम्, अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में प्रकाशित हो चुका है। अनेक पत्र पत्रिकाओं में लेख भेजकर मैं रक्तसाक्षी पं. लेखराम के एक आदेश 'तहरीर' का काम बन्द नहीं होना चाहिये का ही पालन करता हूँ। न ''छपास'' की भूख मिटाने को और न आर्थिक लाभ के लिये। धार्मिक विषयोंवाली पत्र–पत्रिकाओं के लेखकों को कोई पारिश्रमिक नहीं मिलता और न वे उसकी अपेक्षा रखते हैं।

निःसंदेह मैं आचार्य जी का हृदय से सम्मान करता हूँ। आर्य परम्परा में विद्वानों का आदर करना सिखाया जाता है। मैंने जिज्ञासा समाधान ३८ का गहराई से अध्ययन किया है। इस समाधान के पूर्व कर्मफल सिद्धांत पर जिज्ञासा समाधान के सभी पूर्व अंकों का भी मैनें मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया है।

सम्पूर्ण लेख को आचार्य जी ने जिज्ञासा (क्रमांक ३८) मानकर उसका समाधान प्रस्तुत किया है। मुझे प्रसन्नता है कि परोपकारी के सुधी पाठकों को मेरा द्वितीय पढ़ने को मिला। इससे पूर्व मेरा लेख ''एक अनोखा ब्राह्मण और उसके द्वारा स्थापित कीर्तिमान'' नवम्बर २००८ में प्रकाशित हुआ था।

आचार्य जी ने लेख के समाधान का वर्गीकरण चार भागों में यथा क, ख, ग, घ में किया है। मैं अपना अभिमत इसी वर्गीकरण के अंतर्गत प्रस्तुत करता हूँ। आशा है परोपकारी इसे प्रकाशित करने का सौहार्द प्रदर्शित करेगा/करेगी।

(क) मैनें अपने लेख में क्रियमाण व संचित कर्म शब्दावली का उपयोग न कर सिर्फ इतना ही लिया है कि पाप–पुण्य तुल्य वाले जीव को मनुष्य शरीर मिलता है। इसका आशय स्पष्ट ही है कि यहाँ 'संचित कर्म ही अभिप्रेत है, क्रियमाण कर्म नहीं।

आचार्य जी ने अंकित किया है कि 'संचित कर्मो में जब पाप–पुण्य की तुल्यता होती है तो साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है। यहाँ साधारण विशेषण भ्रमोत्पादक एवं अनावश्यक है। सब मनुष्य ''साधारण'' ही उत्पन्न होते हैं। उन्हें असाधारणता उनके कर्मो से प्राप्त होती हैं। आदि शंकराचार्य, गौतम, बुद्ध, स्वयं महर्षि दयानंद भी साधारण मनुष्यों की साधारण संताने थी। इसी प्रकार अब्राहम लिंकन, महात्मागाँधी, गणितज्ञ रामानुजम, विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटीन, हिटलर एवं स्टालिन भी साधारण मनुष्य की साधारण संताने थी। जिन असाधारण मनुष्यों ने गृहस्थाश्रम धर्म का पालन किया उनकी संतानों को कोई भी असाधारण नहीं मानता। क्या गौतम बुद्ध का पुत्र उतना ही महान हुआ जितना वे स्वयं थे। क्या हीरालाल जी महात्मागाँधी की असाधारण संतान थे?

आचार्य जी ने अंकित किया है कि (२) जन्म के समय उनका वर्गीकरण उत्तम, मध्यम, निकृष्ट शरीरादि सामग्रीवाले के रूप में ही महर्षि ने निरूपित किया है। इस वाक्य में ''शरीरादि सामग्रीवाले'' वाक्यांश दृष्टव्य है। निर्धनता, भुखमरी, मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव तथा शिक्षा के अभाव में उत्पन्न जीव को, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ जीन्स वाले माता–पिता कहाँ से और कैसे प्राप्त होंगे? शरीर की प्राप्ति जीवशास्त्र का एक अति कठिन विषय है। इस पर जीवशास्त्रियों की सम्मति लेना उचित होगा।

क(।।) आचार्य जी ने अत्याधिक कुशलता से निरूपित किया है कि गरीब ही अपराध नहीं करते, गरीबी की रेखा के ऊपर वाले भी अपराध करते हैं, पाप करते हैं। इस समाधान में आचार्य जी ने कारण और अनुपात का ध्यान नहीं रखा। गरीब, निर्धन के अपराध का कारण उसकी निर्धनता है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का कोई साधन न होना है, इसलिये उसके अपराध का प्रतिशत सर्वाधिक है। रहा सवाल, खाते–पीते, सम्पन्न लोगों के अपराध या पाप में संलग्न होने का। उसके दो कारण प्रमुख है–लोभ और कामवासना। जहाँ तक दृष्टिपात कीजिये प्रमुखतया यही कारण मिलेंगे और इनके कर्ताओं की संख्या

कुल सम्पन्न लोगों की संख्या का दस प्रतिशत से भी कम होगी। क(।।।) आचार्य जी ने निर्धनता का कारण समाज व राष्ट्र द्वारा किये गये अन्याय को रेखांकित किया है। समाज या राष्ट्र, ये अन्याय, सम्पन्न लोगों के विरूद्ध क्यों नहीं कर पाता ? क्या सिर्फ इसलिये कि वे प्रतिरोध की क्षमता रखते हैं ?

(ख) आचार्य जी का कथन है कि निर्धन वर्ग (यहाँ अति निर्धनवर्ग की चर्चा हो रही है) मनुष्य जीवन की 'महत्ता' को समझ सकता है। आचार्य जी का यह अभिमत सत्य से परे है, बहुत परे है। प्रतिदिन जब व्यक्ति का सम्पूर्ण सामर्थ्य रोजी–रोटी की जुगाड़ करने में ही व्यतीत हो जाता है। रात्रिकालीन समय खा–पीकर पत्नी के आगोश में बिताकर व्यतीत हो जाता है और फिर अगली सुबह वही चिन्ता। तब उसके पास भजन–पूजन, चिन्तन–मनन, लोक कल्याण के लिये समय व शक्ति (धन तो उसके पास है नहीं) देने के लिये कुछ बचता है ? आचार्य जी निर्धनवर्ग के जीवन के इस पहलू पर जरा ध्यान तो दीजिये ?

(ग) इस बिन्दु के समाधान करते स्वयं आचार्य जी ही फंसे दिखाई देते हैं। जीव प्रवाह से अनादि है। मनुष्य जन्म मिलने पर अधिकांशतः जीव पाप (मनसा, वाचा, कर्मणा) अधिक करते हैं। इसलिये उनके क्रियमाण कर्म जिनके परिणाम उसने अपने जीवनकाल में नहीं भोगे हैं, मृत्योपरांत संचित कर्मो में जुड़ जावेंगे। यह वृद्धि पापियों की, दुष्टों की ही अधिक होगी, धर्मात्माओं, सच्चरित्रों की नहीं होगी।

दूसरी बात, जीवन एक जैविक प्रक्रिया है। इसे पाप–पुण्य से जोड़ना उचित नहीं है। जीवित मनुष्य को ही सदाचारी भलामानुष, लोकहितैषी बनाने के लिये ही पाप–पुण्य का 'भय' दिखाया जाता रहा है। चाहे वह रौरव नर्क के नाम पर हो, चाहे दोज़ख के नाम पर।

(घ) इस बिन्दु के अन्तर्गत आचार्य जी ने बहुत कुछ 'समेटने' का प्रयत्न किया है। आचार्य जी का कथन है कि सामूहिक नरसंहार के जनक स्टालिन (२ करोड़ से अधिक) हिटलर (५०–६० लाख) को यह अतिमानवीय शक्ति उन्हें ''कर्मानुसार'' प्राप्त हुई थी और इस शक्ति को उन्होंने बढ़ा लिया था। यदि यह बात सत्य है तो ईश्वर के सृष्टा और नियामक स्वरूप का क्या बना ? ईश्वर अपनी समस्त रचना को 'ऋतु' में, शाश्वत, अटल नियमों में निबद्ध कर संचालित करता है। जब प्रलयावस्था में जीव भी परमात्मा के आश्रय में रहता, तब उसे किसी भी जीव को अनियंत्रित, अपरिमित शक्ति सम्पन्न नहीं करना चाहिए। क्या इसका वेद सम्मत अन्य समाधान है ? परमात्मा के इस कार्य–व्यापार को वेदज्ञ मनीषियों को सोचना, समझना चाहिये और वह ज्ञान हम जैसे अल्पज्ञों को हृदयंगम कराना चाहिए।

दूसरे आचार्य जी का यह कथन कि इतने बड़े नरसंहार ''सैंकड़ों–हजारों–लाखों'' के एकजुट होने पर होते हैं; सही नहीं है। इनको एक जुट किसने किया ? एक व्यक्ति ने। जर्मनी के हिटलर ने, रूस के लेनिन और स्टालिन ने राष्ट्रवाद का ऐसा उन्माद, ऐसा जुनून अपने देशवासियों में भर दिया कि वे उन व्यक्तियों के आदेशों को बिना ना–नुकुर किए पालन करते गए। न्यूरेमबर्ग न्यायालय में जब हिटलर द्वारा आयोजित यहुदियों के कत्लेआम के एक प्रमुख व्यक्ति आईखमेन पर मुकद्दमा चला तो उसने पूरी गंभीरता से समस्त उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हुए कहा कि उसने कोई नरसंहार में हिस्सा नहीं लिया। उसने तो केवल फ्यूहरर के आदेशों का ही पालन किया। आज भी जर्मनी में हिटलर के हजारों कट्टर समर्थक, प्रशंसक मिल जावेंगे। यदि वहाँ गलती से भी हिटलर का उल्लेख अपमानजनक शब्दों में किया तो जान की खैर नहीं।

आचार्य जी का यह कथन–''गलत प्रेरणा आदि से दूसरे मनुष्य गलत कार्यों के लिये एक जुट हो जाते हैं, ठीक है। पर बात चल रही है पाप–पुण्यों अवधारणा की। किन पापों के कारण इन लाखों–करोड़ों मानवों–आबालवृद्ध नरनारी को इतनी भीषण, भयावह, अकल्पनीय पीड़ा युक्त मृत्यु मिली ? उनके पापों के कारण या इन नरसंहारों के जनक की अतिअमानवीय शक्ति के कारण ? उत्तर इसका चाहिये था जो उन्होंने नहीं दिया।

आचार्य जी का यह कथन–''यदि आत्मा की कर्म की स्वतंत्रता को अस्वीकार करेंगे तो कहीं उचित समाधान नहीं होगा। यही तो मेरा मन्तव्य है कि वेद मर्मज्ञ विद्वानों को, संन्यासियों को चिन्तन–मनन कर समाधान ढूँढना होगा ? यहीं तो मुझे महर्षि दयानन्द याद आते हैं, बहुत याद आते हैं। महर्षि जैमिनी पर समाप्त हुई ऋषि परम्परा को उन्होंने पुनर्जीवित किया। उन्हें तो अपना कार्य–चारों वेदों का भाष्य करने का समय ही नहीं मिला। कुल आयु मिली ५६ वर्ष १ माह १६ दिन। क्रियात्मक जीवन मिला लगभग १५ वर्ष। उसमें भी अधिकांश समय चला गया भ्रमण, प्रवचन व शास्त्रार्थ में। काश! वह जीवित रहते और अपना कार्य पूर्ण कर जाते। जीवनकाल में भाष्य के अतिरिक्त सम्भाषण, चर्चा में आने वाले अनेक प्रश्नों पर विचार और उनका समाधान करना पड़ता। संभवतः मेरा प्रश्न भी उन्हें समाधान अपेक्षित लगता और वे उसका वेदानुकूल समाधान दे पाते। उनका परलोकगमन हम भारतीयों का ही नहीं, सम्पूर्ण मानवजाति का दुर्भाग्य है।

"बच्चों को स्वतन्त्रता परन्तु कितनी ?"

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

सभी माता–पिता चाहते हैं कि उन की सन्तान शिष्ट और अच्छे संस्कारों वाली बने। उन के जीवन यापन के उत्तम साधन हों। वे प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले तथा बुढ़ापे का सहारा बनें। इसलिये सभी माता–पिता अपने बच्चों को ज्ञान–वान, स्वस्थ, शिष्ट, तथा सभ्य बनाने का प्रयास करते हैं। वे चाहते हैं कि उनकी सन्तान बुरी संगति में न पड़े। उन में सेवाभाव हो तथा उन्हें पूरा सम्मान दे। भारतीय समाज में राम को मर्यादा पुरुषोतम कहा जाता है। उन्हों ने हर क्षेत्र में मर्यादायें रखीं। बालक के रुप में भी उन का आचरण आदर्श रुप लिये हुये था। भारतीय समाज यह आशा करता है कि उन की आने वाली पीढ़ी उन आदर्शों को अपनाये। तुलसीकृत रामायण की दो चौपाईयां नीचे दी जा रही हैं, जो उन आदर्शों में से कुछ पर प्रकाश डालती हैं :–

प्रातः काल उठि के रघुनाथा। मात–पिता, गुरु नवाई माथा।। (राम प्रातः उठ कर, माता–पिता की वन्दना करते थे) सुन जननी वही सुत बड़भागी। जो मात–पिता बचन अनुरागी।

(वही जननी भाग्यशाली होती है, जिस का पुत्र माता–पिता के कहे अनुसार चलता है।)

हर समाज का कोई न कोई लक्ष्य होता है और उस लक्ष्य की प्राप्ती के लिये वह समाज अपनी अगली पीढ़ी को शिक्षा द्वारा तैयार करता है। अमेरिका का समाज बच्चों को आत्म निर्भर बनाता है। इटली वाले आज्ञाकारी बनाते हैं। कनाडा का समाज बच्चों की सहनशीलता तथा स्वतन्त्रता पर जोर देता है। भारतीय शिक्षा का वर्तमान में ऐसा कोई लक्ष्य नहीं है। वह दिशाहीन है। परन्तु प्राचीन काल में भारतीय समाज का लक्ष्य बच्चों को सुसंस्कारित बनाना था। बालक को इसके लिये सोलह संस्कारों से गुजरना पड़ता था। इन संस्कारों का उद्देश्य उसकी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति करना होता था। वेदों के अनुसार संस्कार आत्मा तथा शरीर को शुद्ध करते हैं तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराते हैं। इन संस्कारों में तीन जन्म से पहले मात–पिता तथा अन्त्येष्टि संस्कार बन्धु वान्धव करते हैं। शेष सभी संस्कार व्यक्ति की उपस्थिति में किये जाते हैं। इन संस्कारों के उत्तम परिणाम प्राप्ती के लिये बालक को दृढ़ संयम और अनुशासन से गुजरना पड़ता था। मनु स्मृति अनुसार बालक का आचरण ऐसा होना चाहियेः–

दृष्टि पूतं न्यसेत्पादं, वस्त्र पूतं जलं पिवेत्।
सत्य पूतं वदेद्ववाचं, मनः पूतं समाचरेत।

(दृष्टि नीचे कर के चले, वस्त्र से छान कर जल पिये, सत्य से पवित्र कर के वचन बोले, मन से विचार कर आचरण करे) व्याकरण महाभाष्य में माता–पिता तथा आचार्य के लिये बालक के आचरण सुधारने के लिये कठोरता से काम लेने की भी आज्ञा हैः–

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालना श्रयिणो दोषाः, ताड़ना श्रयिणो गुणाः।।

(जो माता–पिता, आचार्य, सन्तान और शिष्य को ताड़ना करते हैं, वे अपने हाथों से उन्हें अमृत पिला रहे हैं। जो लाड–लड़ाते हैं, वे उन्हें विष पिला कर भ्रष्ट कर रहे हैं। क्योंकि लाड से दोष युक्त और ताड़ना से गुण युक्त होते हैं।)

एक अन्य श्लोक में कहा गया हैः–

लालयेत पंच वर्षाणि, दस वर्षाणी ताड़येत।
प्राप्तेषु षोड्स वर्षे, पुत्रं मित्रं आचरेत्।।

(बच्चे का पांच साल तक प्यार से पालन करो। अगले दस वर्ष तक प्रताड़ना करो। सोलह वर्ष प्राप्त करने पर पुत्र को मित्र मानो)

छः से पन्द्रह वर्ष की आयु में बालक पर नियन्त्रण तथा अनुशासन में रखने की बात कही गई है। यही समय होता है जब बालक बिगड़ सकता है। अतः बच्चे के जीवन को ठीक दिशा देने के लिये यदि कठोरता भी की जाये तो उसमें कोई बुराई नहीं। परन्तु खेद इस बात का है कि हम आंखें मूंद कर पश्चिम का अनुकरण करते हैं। भारतीय समाज में बच्चों की स्वतन्त्रता का विचार नया है। जो शिक्षा–शास्त्री तथा कानून विद लाये हैं। परन्तु प्रश्न है कि बच्चों को किस सीमा तक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये। अधिकतर माता–पिता किसी स्वतन्त्रता के पक्षधर नहीं हैं और न ही समाज में ऐसी परम्परा रही है। माता–पिता समझते हैं कि ऐसा करने से वे समाज की विपरीत धारा में बहने लगेंगे। प्रायः बच्चों को खाने–पीने, पहनने की स्वतन्त्रता रहती है। मित्रों के चुनाव में भी स्वतन्त्रता होती हैं। शेष सभी बातों में बच्चों पर निगरानी तथा मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है। क्योंकि वे भावुक,

अनुभवहीन तथा अपरिपक्व होते हैं। वे दिमाग से नहीं दिल से सोचते हैं। वे किसी भी बुराई की ओर अग्रसर हो सकते हैं। वे बुरी संगत में पड़ सकते हैं। उन्हें नशे की लत लग सकती है। हमारा समाज सीमित खुलापन सहन कर लेता है परन्तु उस सीमा से परे उंगलियां उठने लगती है। अतः यह जरुरी है कि बालक को कितनी और कैसी स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये विषय पर गम्भीरता से विचार किया जाए। खाने–पहनने तथा अध्ययन के विषयों के चुनाव की स्वतन्त्रता बालक–बालिका को हानी चाहिये। अपने से सम्बन्धित विषयों पर विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता भी होनी चाहिये। परन्तु कोई भी स्वतन्त्रता अनियन्त्रित नहीं होनी चाहिये। बच्चे नादानी कर सकते हैं। अतः अभिभावकों द्वारा नज़र रखी जानी चाहिये। स्वतन्त्रता के साथ उन्हें कर्तव्य निभाने का एहसास होना चाहिये। उन्हें अपना उत्तरदायित्व निभाने की समझ होनी चाहिये। नियन्त्रण का अर्थ हर बात में रोक टोक नहीं। हमें उन पर कहीं न कहीं भरोसा करना ही होगा। कर्तव्य निभाने से स्वतन्त्रता सशक्त होती है। बच्चे बड़े–बूढों से दूरी बनाये रखते हैं परन्तु वह दूरी इतनी अधिक न हो कि बच्चे उन से परामर्श लेने से झिझकें और समस्याओं को सुलझाने के लिये उन तक पहुँचें ही नहीं।युवाओं में धमाल मचाने, पार्टियों में जाने, एस. एम. एस. और चेटिंग करने तथा तेज़ वाहन चलाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अतः अभिभावकों का यह कर्तव्य बनता है कि उन का सही मार्ग दर्शन करें और गलत बातों से रोकें। उन्हें त्रुटिपूर्ण आचरण के दोष बतायें। सही तथा गलत का आभास करायें। उन पर प्रतिबन्ध थोपे नहीं परन्तु इस का यह भी अर्थ नहीं कि शर्तों पर बच्चों को स्वतन्त्रता दी जाये। खुल कर बात करने की आवश्यकता है। उन्हें उत्तरदायी बनायें। प्रेम से समझायें। शेष सभी बातों के चुनाव में भी वे स्वतन्त्र होते हैं।

क्रोध का वातावरण न बनायें। अवेहलना करने पर भी संयम रखें। प्रेम से सुधार किया जाना चाहिये। कहने का तात्पर्य है कि बच्चों को स्वतन्त्रता दें परन्तु लगाम इतनी ढ़ीली भी न छोडें कि वे अनियन्त्रित ही हो जायें।

"एक खुला पत्र"

परम् आदरणीय आचार्य रामफल जी एवं परम पूजनीय माता रानी आर्य जी,

सादर प्रणाम।

विद्यालय में आयोजित दो दिवसीय शिविर जो दिनांक १६ और २० अप्रैल २०१३ को सम्पन्न हुआ, जिसने हमारे ह्रदय में ज्ञान की ज्योति जलाई, हमें वो ज्ञान प्राप्त हुआ है, जो हमें कभी नहीं मिला। क्योंकि दीपक तो तभी रोशनी देगा, जब उसे जलाया जाता है हम उस बुझे दीपक के समान थे किताबें तो हमने भी पढ़ीं लेकिन उनके बारे में गहन चिन्तन नहीं किया, हमें उन छोटी सी छोटी बातों का ज्ञान नहीं था जो हमें आपके द्वारा प्राप्त हुईं । आपके माध्यम से हमें यह शिक्षा मिली है कि अपने लिए तो सब सोचते है लेकिन सोचना है तो दूसरों के लिए सोचो, और अगर जीना है तो दूसरों के लिए जिओ।

"अपने लिए जिए तो क्या जिए ?
तू जी ऐ दिल जमाने के लिए।"

इसी तरह आपने हमें संस्कार व संस्कृति के बारे में उचित मार्गदर्शन करवाया। हमें शिक्षा का अर्थ समझाया जिससे हमारा सर्वांगीण विकास हो सके। रानी आर्या जी की आवाज में जो मधुरता है और उनके एक–एक बोल में जो अर्थ छुपा है, उसकी तो हम व्याख्या भी नहीं कर सकते।

हम आपके प्रवचनों और पूज्या रानी आर्या जी के भजनों से बहुत प्रेरित हैं और मेरे मन में यह भावना जागृत हुई है कि मैं भी आर्य समाज के साथ जुड़कर कार्य करूं। अतः आपसे अनुरोध है कि आप फिर से हमारे विद्यालय में आते रहें और हमें व विद्यार्थियों के ह्रदय में ज्ञान की ज्योति जलाते रहें।

रंजना कुमारी
नर्सरी अध्यापिका
भारतीय दयानन्द पब्लिक स्कूल
जोगिन्द्र नगर।

दिनांक : २२ अप्रैल, २०१३

गौ-संरक्षण

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

गाय भारतीय संस्कृति का प्रमुख अंग है। गाय को फारसी में 'गाओ' अंग्रेज़ी में 'कऊ' और जर्मनी में 'कोवन' कहते हैं ये सभी संस्कृत भाषा के 'गौ' के अपभ्रंश हैं। आर्य अपने को गौपति कहलाने में गर्व अनुभव करते थे क्योंकि गाय व्यापार एवं लेन देन और विनिमय में आर्यों की सहायक रही है। मां तो बच्चे को अधिक से अधिक दो वर्ष तक दूध पिलाती है किन्तु गाय तो बचपन से बुढ़ापे तक दूध पिलाती है इसलिए गाय के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए माता की संज्ञा दी गई है।

गाय की उपयोगिता और महत्व का महर्षि दयानन्द जी ने अपनी 'गौ करूणा निधि' नामक पुस्तक में विस्तार से वर्णन किया है। शास्त्रानुसार गौ विश्व–माता है। पशुजगत में गाय एकमात्र ऐसा पशु है जिसके गोबर और मूत्र को पवित्र माना जाता है। गाय के गोबर से न केवल उत्तम खाद बनती है अपितु ताजे गोबर से पूजास्थल का लेपन कर उसे पवित्र बनाया जाता है। कच्चे मकानों में तो रसोईघरों में प्रतिदिन लेपन की प्रथा थी जो गांवों में अभी भी जारी है। गोमूत्र से कीटनाशक घोल तैयार किया जाता है जो फलों और सब्जियों पर किया जाय तो मानव स्वास्थ्य के लिए अति लाभकारी है। इस घोल का छिड़काव करने से मिट्टी की उर्वरकता बढ़ती है और पर्यावरण भी शुद्ध रहता है। गौमूत्र अनेक जीवन रक्षक औषधियों में प्रयोग किया जाता है। यह अग्निवर्धक है, कफ, पित्त, खुजली, पाण्डुरोग तथा पेट की अनेक बीमारियों को दूर करता है। वैज्ञानिक तथ्यों से सिद्ध हो चुका है कि गाय की रीढ़ की हड्डी में सूर्य केतु एक ऐसी नाड़ी है जो सूर्य की किरणों के सम्पर्क में आने से स्वर्ण रंग बनाती है। इसी कारण गाय का दूध एवं घी स्वर्ण की तरह पीली आभा लिए होता है।

धनवन्तरी के अनुसार काली गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए उत्तम एवं रोग रोधक होता है, लाल गाय का दूध वात–पित्त शान्त करता है। दूध सन्तुलित आहार है जिस से दिल और दिमाग अच्छा, बुद्धि निर्मल, स्मृति तेज और दीर्घायु होती है। वनवास काल में यक्ष ने युधिष्ठिर से सोलह प्रश्न पूछे थे उन में एक यह भी था 'किं अमृतम्' ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया 'गबा अमृतम्' अर्थात् गाय का दूध अमृत है। गोमूत्र, गोमय और पंचगव्य आदि उत्पादों के महत्व के कारण गाय को सर्वोपयोगी प्राणी सिद्ध किया है। खेद से लिखना पड़ रहा है कि आज पशुपालक अनचाहे बछड़ों और बांझ गऊओं को भाग्य के भरोसे जीने और दर–दर भटकने के लिए खुला छोड़ देते हैं। इसे पशुओं की नियति कहें या पशुपालक की विवशता जो मंहगा चारा खिला कर अपनी आर्थिकी नहीं बिगाड़ना चाहता। पेट की आग बुझाने के लिए खेतों में यहां वहां मुंह मारती ये निरापराध अवारा गऊऐं लोगों का कोपभाजन बन कर डण्डे खाती जब सड़कों पर आ जाती हैं तो दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं। अनेक बार देखा गया हैं, ये स्वयं दुर्घटना का शिकार बन कर अपनी टांगे तुड़वाती घायल और लंगड़ाती हुई मूक भाषा में अपनी दुःख भरी कहानी आप कहती हैं। योगी राज श्री कृष्ण ने कभी भी और कहीं भी गौ सेवा का उपदेश नहीं दिया अपितु स्वयं धेनु सेवा कर आदर्श प्रस्तुत किया और 'गौपाल' नाम से कीर्ति प्राप्त की। लगता है कान्हा ने इनकी व्यथा सुन ली है। सड़कों पर भटकने वाली गायों के प्रति संवेदना जगी है। सरकार ने लावारिस गायों के संरक्षण की पहल की है। योजना के अधीन अच्छी आमदनी वाले मन्दिर जो ट्रस्ट के अधीन हैं के समीप गोशालाऐं बनाई गई हैं। चिन्तपूर्णी, ब्रजेश्वरी मन्दिर कांगड़ा और नयनादेवी के निकट गौशालाऐं बनाकर उन की देखभाल की उत्तम व्यवस्था की गई है। हिन्दू संस्कृति के अनुसार जब परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है तो मात्र तेरह दिन तक 'ग्रोग्रास' के रूप गाय को भोजन खिलाया जाता है। यह धर्म के नाम पर आडम्बर और रस्म निभाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं। जिला बिलासपुर की 'प्रगति'समाज सेवा समिति' ने बेसहारा गोवंश को सहारा देने का बीड़ा उठाया है जो एक सराहनीय पग है। संस्था ने 'गोग्रास' के रूप में प्रत्येक घर से एक मुठ्ठी अनाज प्रतिदिन एकत्र करने का अद्भुत अभियान आरम्भ किया है ताकि कोई गाय भूखी न रहे। यह योजना प्रंशसा योग्य तथा अनुकरणीय है।

इस पृष्ठभूमि में गाय जैसे पूजनीय जीव की हत्या महापाप ही नहीं, बहुत बड़ा समाज द्रोह और अपराध घोषित होना चाहिए। खेद है गौ रक्षक देश में गोबध की रोकथाम के लिए कोई कानून नहीं। वोटों की राजनीति और धर्म निरपेक्षता की आड़ में इस ओर कोई कार्रवाई नहीं की जाती।

सद्विचार

- आत्मा को अधोगति में न पहुंचावें क्योंकि जीवात्मा आप ही अपना मित्र है और आप ही अपनी शत्रु है।
- मनुष्य जब क्रोधित होता है तो उस की बहुत सारी ऊर्जा नष्ट हो जाती है। अतः ऊर्जा का प्रयोग बुद्धिमत्ता से करें।
- मितव्ययता बुढ़ापे की आराम कुर्सी है।
- जन्म लेते ही कोई किसी का मित्र या शत्रु नहीं बनता, व्यवहार से ही मित्र और शत्रु बनते हैं।
- भूतकाल पर आंसू मत बहाओ, भविष्य चाहे कितना भी उज्ज्वल क्यों न हो, उस पर कभी विश्वास मत करो। वर्तमान में कार्यरत्त रहो, मन में साहस और ईश्वर पर विश्वास रखो, सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।
- मानव जीवन सिक्के की तरह है। सुख और दुःख दो किनारे हैं। एक समय में केवल एक ही किनारा दृष्टि गोचर होता है किन्तु स्मरण रहे दूसरा किनारा भी अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा है।
- विचार बदल जाएं तो नज़र बदल जाती है। नज़र बदल जाए तो नज़ारा बदल जाता है, किश्ती का रूख बदल जाय तो किनारा बदल जाता है।
- जितना हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता है।
- गरीबी यदि थोड़े दिन हो तो बहुत अच्छी, क्योंकि इस से अपने और पराये का पता चल जाता है।
- सत्संगति से वह कौन सी ऊंचाई है जिसे मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता ? कुसंगति से ऐसी कौन सी खाई है, जिस में जा कर वह डूब नहीं जाता ?
- ईश्वर ने प्राणी को मात्र कर्म करने की अनुमति प्रदान की है। अतः हमें सदैव सद्कर्म ही करना चाहिए। सब का भला ही करना चाहिए, बुरा कभी नहीं। यदि भला न कर सकें तो बुरा भी न करें।

संकलनकर्त्ता–विनोद स्वरूप

चुनाव समाचार

हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ बल्ह खण्ड के द्विवार्षिक चुनाव २६ अप्रैल, २०१३ को पंचायत घर डडौर के परिसर में प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं जिला मण्डी के प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए जिसमें प्रधान श्री मंगत राम चौधरी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री राम सिंह, महासचिव श्री जय राम एवं कोषाध्यक्ष श्री ललित कुमार को चुना गया। कार्यकारिणी के अन्य पदाधिकारियों का चयन करने के लिए उपरोक्त चारों नवनियुक्त पदाधिकारियों को अधिकृत किया गया। उक्त चुनाव सुन्दरनगर के सचिव श्री विनोद स्वरूप जिन्हें जिला कार्यकारिणी ओर से पर्यवेक्षक नियुक्त किया था ने लोकतान्त्रिक ढंग से शान्तिपूर्वक सम्पन्न करवाये। जिला महामन्त्री श्री भगत राम आजाद ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित कोषाध्यक्ष श्री ललित कुमार जी ने अपने ओर से सभी उपस्थित सदस्यों को जलपान करवाया।

–सम्पादक

संघ बैठक

हि. प्रै. क. संघ सुन्दरनगर खण्ड के मासिक बैठक ३० अप्रैल को जवाहर पार्क सुन्दरनगर में खण्ड प्रधान श्री मोहन सिंह की अध्यक्षता में दिन के २ बजे सम्पन्न हुई जिस में जिला मण्डी के प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य, जिला महासचिव भगत राम आजाद, प्रदेश उपाध्यक्ष एवं नगरपालिका सुन्दर की अध्यक्षा श्रीमति गिरिजा गौतम, प्रदेश प्रचार सचिव ठाकुर हरि सिंह एवं जिला कोषाध्यक्ष श्री जय राम वर्मा भी उपस्थित थे। इस बैठक में सुन्दरनगर खण्ड के द्विवार्षिक चुनाव जो १० मई के आनन्द धाम वृद्धाश्रम में प्रातः ११ बजे होने जा रहे हैं के सम्बन्ध में रूप रेखा तैयार की गई। सुन्दरनगर ब्लाक के सभी पैंशनर्ज़ चुनाव प्रक्रिया में भाग लेंगे। उस दिन सभी के लिए दोहपर की भोजन की व्यवस्था भी की गई है।

–विनोद स्वरूप, सचिव

१०१ वर्षीय चन्द्रमू देवी चल बसी

सेवा निवृत श्री रघुपति शास्त्री और श्री भीमचन्द वात्स्यायन की पूज्य माता श्रीमती चन्द्रमू देवी का १०१ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अति धार्मिक प्रकृति और प्रवृति की महिला थीं। उन्होंने जीवन में अनेकों बसन्त और पत्तझड़, सुख–दुःख, धूप छाया हंसते गाते और मुस्कराते व्यतीत किये। उनके पति श्री स्व. अजुध्या प्रसाद का पच्चास साल पूर्व देहान्त हो गया था। स्व. श्रीमती चन्द्रमू देवी ने अपने जीवन के अशान्त, दुःख युक्त समय का बहादुरी और साहस से सामना किया और अपने बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा कराया। आर्य समाज सुन्दर नगर द्वारा इन्हें सम्मानित भी किया गया है। सम्मानित किऐ जाने के उपरांत उन्होंने–'चल उड़ जा रे पंछी कि अब यह देश हुआ बेगाना' गीत सुनाकर सभी श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। दिवंगत आत्मा को प्रभु अपनी व्यवस्था में शान्ति प्रदान करे।

चुनाव से सम्बन्धित नोटिफिकेशन

सेवा में

जिला मण्डी के सभी खण्डों के
मान्य प्रधान/सचिव एवम् जिला कार्यकारिणी सदस्य।

विषयः– द्विवार्षिक चुनाव २०१३–१५ से सम्बन्धित नोटिफिकेशन।

मान्यवर,

प्रदेश प्रधान श्री बी.डी. शर्मा के चुनाव घोषणा पत्र न. एच.पी.के.एस./३०४–२८ दिनांक २८–०३–२०१३ के अनुसार सभी खण्डों के चुनाव १०–०५–२०१३ तक सम्पन्न हो जाने चाहिए। अपने खण्ड की सुविधानुसार चुनाव की तिथि व वैन्यु निश्चित कर ले तथा तिथि और वैन्यु की सूचना की तारीख से १० दिन पहले जिला प्रधान व सचिव को दे दें ताकि जिला की ओर से पर्यवेक्षक भेजा जा सके।

जिला कार्य–कारिणी के चुनाव १६ मई, २०१३ को ११.०० बजे चच्योट खण्ड के चैलचौक में सम्पन्न होंगे। अजैण्डा निम्न प्रकार से होगाः–

१. गत बैठक की कार्यवाही की पुष्टि।
२. द्विवार्षिक कार्यों सम्बन्धी ब्योरा प्रधान द्वारा।
३. आय–व्यय का ब्योरा कोषाध्यक्ष द्वारा।
४. सदस्यों के विचार व सुझाव।
५. वर्ष २०१३–१५ के लिए जिला कार्यकारिणी का गठन।

१. चुनाव से पहले जिला शेयर तथा स्टेट कैशियर के पास जमा करवाना होगा।
२. डैलीगेटस की लिस्ट पूरे पते सहित तथा फोन नम्बर सहित सचिव को देनी होगी।
३. सभी खण्डों के प्रधान अपने खण्डों के चुनाव से पहले वार्षिक रिपोर्ट तथा आय व्यय का ब्योरा जरनल हाऊस में देगें और पास भी करवायेंगे।
४. बहुत से खण्डों ने अभी तक रसीद बुकों की रसीदें नहीं भेजी हैं जो उन्हें पार्सल द्वारा भेजी गई थी, शीघ्र भेजें।
५. स्टेट के चुनाव २६–०३–२०१३ को अनाथालय डैहर में लिए गए स्टेट कार्यकारिणी के निर्णयानुसार ८ जून, २०१३ को राजकीय उच्च माध्यमिक पाठशाला (बालक) ऊना में ही होंगे।
६. किसी भी अन्य जानकारी के लिए जिला प्रधान/सचिव से सम्पर्क करें।

कृष्ण चन्द आर्य — प्रधान
भगत राम आजाद — महासचिव

हिमाचल में हाई ब्लड प्रैशर की बीमारी से कई लोग ग्रस्त

हिमाचल में हर चौथे शहरवासी और हर पांचवे गांववासी को हाई ब्लड प्रेशर की बीमारी है। भारतीय स्वास्थ्य अनुसंधान परिषद की ओर से करवाए गए इस सर्वेक्षण में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। इसके मुताबिक ७० फीसदी हिमाचलियों को यह पता ही नहीं होता कि उन्हें उच्च रक्तचाप है। चेकअप करने के बाद ही उन्हें उस बारे में पता चलता है। यह जानकारी आईसीएमआर की तरफ से सर्वेक्षण करने वाले आईजीएमसी शिमला के हृदयरोग विभाग के प्रमुख ने दी।

डॉक्टर ने बताया कि दुनिया भर में इस बार का विषय भी इसी बीमारी को रखा गया है। पिछले चार साल तक गम्भीर सर्वेक्षण के बाद ये बातें सामने आई हैं। सर्वे रिपोर्ट अब परिषद को भेजी जा रही है। यह सर्वेक्षण १० हज़ार लोगों पर किया गया। इनमें उच्च रक्तचाप के प्रमुख कारण खोजे गए हैं। ये बढ़ती उम्र, पुरुष वर्ग की जीवनशैली, शारीरिक निष्क्रियता, मोटापा और अल्कोहल है।

डॉक्टर के मुताबिक शहरी क्षेत्रों में २५ प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में १६ प्रतिशत लोगों को उच्च रक्तचाप है। उन्होंने बताया कि आईसीएमआर को भेजी जा रही इस रिपोर्ट को लेकर हिमाचल सरकार को भी अवगत करवाया जा रहा है। हिमाचल में हाइपरटेंशन को लेकर सरकार उचित उपचार के कदम उठाती आई है। आगे भी इस पर अधिक फोकस रहेगा।

कैसे बचें :

- साल में कम से कम एक बार चेकअप जरूरी
- रोजाना कम से कम आधा किलो सब्जी खाएं
- मीठा कम से कम खाएं
- अधिक से अधिक पैदल चलें
- शारीरिक व्यायाम करें।

सौजन्य–सूर्य

।। ओ३म्।।

ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी चाहिए। जिससे सुख प्राप्त होगा ही, कष्ट आवेंगे ही नहीं। –स्वामी दयानन्द

ऋग्वेद

यजुर्वेद

स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम–धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।

जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

सामवेद

अथर्ववेद

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क : 01875–220110, 094782–56272, 94172–20110

साभार

श्री हेम राज शर्मा पूर्व अ. अभियन्ता गांव मठ डाक.बलद्वाड़ा तह. सरकाघाट ₹ ३०० की सहयोग राशि आर्य वन्दना हेतु दान दी। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है।

आर्य वन्दना शुल्क : **वार्षिक शुल्क :** ₹ 100, **द्विवार्षिक शुल्क :** ₹ 160, **त्रैवार्षिक शुल्क :** ₹ 200

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०)

२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000

Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में

बुक पोस्ट

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल सुन्दरनगर की गतिविधियां चित्रों की जुवानी